



## मध्यस्थ दर्शन के संदर्भ में शिक्षा का व्यावहारिक एवं मानवीयकरण

डॉ. कान्ता पारीक

सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, आई. ए. एस. ई. (डीयू) सरदारशहर, राजस्थान, भारत

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.19727679>

Corresponding Author: डॉ. कान्ता पारीक

सारांश

यह शोध पत्र, श्री ए. नागराज (नागराज मुनि) द्वारा प्रतिपादित एक व्यापक दार्शनिक प्रणाली—'मध्यस्थ दर्शन' (सह-अस्तित्ववाद)—के आलोक में शिक्षा के व्यावहारिक और मानवीय आयामों की पड़ताल करता है। यह दर्शन मानवता को एक समग्र और सह-अस्तित्ववादी विश्वदृष्टि प्रदान करता है, जो भौतिक और आध्यात्मिक पक्षों को एक-दूसरे के अधीन किए बिना, उन्हें आपस में एकीकृत करता है। यह अध्ययन 'मानव तीर्थ धाम' में अपनाए जाने वाले अनुभवात्मक शिक्षण मॉडल की जाँच करता है; यह छत्तीसगढ़ में स्थित एक संस्थागत केंद्र है जो 'जीवंत शिक्षा' के माध्यम से इस दर्शन के प्रसार के लिए समर्पित है। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन मध्यस्थ दर्शन और बौद्ध 'मध्य मार्ग' (मज्झिम पटिपदा) के बीच दार्शनिक समानताएँ स्थापित करता है, और 'डेलर्स रिपोर्ट' (UNESCO, 1996)—जिसका शीर्षक 'Learning: The Treasure Within' (सीखना: भीतर छिपा खजाना) है—के चार स्तंभों के साथ एक सैद्धांतिक अभिसरण (मेल) दर्शाता है। अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि आधुनिक शिक्षा को मानवीय बनाने की दिशा में मध्यस्थ दर्शन में असाधारण क्षमता निहित है, और यह वैश्विक स्तर पर प्रासंगिक शैक्षिक लक्ष्यों के लिए एक विशिष्ट भारतीय दार्शनिक आधार प्रदान करता है।

मूल शब्द: मध्यस्थ दर्शन, शिक्षा, व्यावहारिक, मानवीयकरण, UNESCO

### 1. प्रस्तावना

शिक्षा, अपने गहनतम अर्थ में, सदैव ज्ञान और जीवन के बीच एक संवाद रही है। सदियों और संस्कृतियों के पार, विचारकों ने माना है कि केवल तथ्यों का संचरण ही सार्थक शिक्षा का गठन नहीं कर सकता — जो समान रूप से, यदि अधिक नहीं, मायने रखता है, वह है ज्ञान, चरित्र और सामंजस्यपूर्ण जीवन की क्षमता का विकास। फिर भी समकालीन शिक्षा के प्रभावशाली मॉडल अक्सर शिक्षा को केवल साधनगत दक्षताओं तक सीमित कर देते हैं: रोजगार के लिए कौशल, प्रवेश के लिए अंक, आर्थिक उत्पादन के लिए परिणाम। यह न्यूनीकरणवाद, आलोचकों का तर्क है, तकनीकी रूप से कुशल व्यक्ति तो पैदा करता है, लेकिन जो अस्तित्वगत रूप से भ्रमित रहते हैं — मशीनें बनाने में

सक्षम, लेकिन अपने लिए कैसा जीवन बनाएँ, इससे अनिश्चित।

इसी संदर्भ में मध्यस्थ दर्शन — जो भारतीय चिंतक श्री ए. नागराज द्वारा बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विकसित सह-अस्तित्व का दर्शन है — एक मौलिक रूप से भिन्न दृष्टि प्रस्तुत करता है। कुछ वृत्तों में 'दर्शन-ए-नाराज' के नाम से प्रचलित (यह शब्द दार्शनिक के मौजूदा ढाँचों से असंतोष और उनकी जाँच की आलोचनात्मक-फिर भी-रचनात्मक भावना दोनों को समेटता है), मध्यस्थ दर्शन प्रतिपादित करता है कि वास्तविक शिक्षा को मनुष्य को अस्तित्व की सही समझ की ओर उन्मुख करना चाहिए। दर्शन मानता है कि ऐसी समझ स्वाभाविक रूप से नैतिक आचरण, संबंधपरक सद्भाव और सामाजिक उत्तरदायित्व उत्पन्न

करती है – थोपे गए नियमों के रूप में नहीं, बल्कि एक जागरूक आंतरिक जीवन की सहज अभिव्यक्तियों के रूप में।

यह शोधपत्र छह प्रमुख भागों में संगठित है। परिचय के बाद, भाग 2 मध्यस्थ दर्शन और इसकी शैक्षिक अनिवार्यताओं का अवधारणात्मक अवलोकन प्रदान करता है। भाग 3 परीक्षण करता है कि कैसे छतीसगढ़ का मानव तीर्थ धाम इस दर्शन के लिए एक जीवंत प्रयोगशाला के रूप में कार्य करता है। भाग 4 बौद्ध मध्यम मार्ग के साथ सार्थक समानताओं का अन्वेषण करता है। भाग 5 दर्शन को डेलर्स आयोग रिपोर्ट से जोड़ता है। भाग 6 इन धारों को एक तुलनात्मक विश्लेषणात्मक ढाँचे में संश्लेषित करता है। शोधपत्र का समापन शैक्षिक नीति और भविष्य के शोध के लिए निहितार्थों के साथ होता है।

## 2. मध्यस्थ दर्शन: सह-अस्तित्व का दर्शन और इसकी शैक्षिक दृष्टि

### 2.1 उद्गम और मूल सिद्धांत

मध्यस्थ दर्शन – शाब्दिक अर्थ 'मध्यस्थ दृष्टिकोण का दर्शन' – श्री ए. नागराज (1920-2016) द्वारा प्रतिपादित किया गया था, जो मध्य प्रदेश के अमरकंटक के एक स्व-शिक्षित भारतीय दार्शनिक थे। वर्षों के गहन चिंतन और उनके द्वारा अस्तित्वगत सत्य की प्रत्यक्ष अनुभूति के रूप में वर्णित अनुभव के पश्चात, नागराज ने एक व्यवस्थित विश्व-दृष्टिकोण विकसित किया, जिसे उन्होंने कई मूलभूत ग्रंथों, जिनमें 'सार्वभौम व्यवस्था दर्शन' और 'मानव व्यवहार दर्शन' शामिल हैं, में संहिताबद्ध किया। इस दर्शन को कभी-कभी 'दर्शन-ए-नाराज' भी कहा जाता है – यह नाम दार्शनिक के भौतिकवाद और आध्यात्मिकता दोनों के प्रति सैद्धांतिक असहमति को संकेत करता है, जिन्हें वे मानव अस्तित्व के अपूर्ण विवरण मानते थे।

मध्यस्थ दर्शन का केंद्रीय दावा यह है कि अस्तित्व, सह-अस्तित्व से निर्मित है: प्रकृति की प्रत्येक इकाई – परमाणु से लेकर मनुष्य तक – प्रत्येक अन्य इकाई के साथ गतिशील संबंध में विद्यमान है, एक व्यापक चेतन ऊर्जा में निमग्न और उससे पोषित। मनुष्य इस जाल में एक अद्वितीय स्थान रखता है: अन्य संस्थाओं के विपरीत, मनुष्य में आत्म-चिंतन (बोध) की क्षमता है, जो, जब विकसित की जाती है, तो 'सही समझ' उत्पन्न करती है। यह सही समझ केवल संज्ञानात्मक नहीं है – यह इच्छा, आचरण और विश्व में व्यक्ति की भागीदारी की समग्र बनावट को ही बदल देती है।

दर्शन मानवीय आकांक्षा के चार आयामों को पहचानता है: सही समझ, समृद्धि, अभय, और सह-अस्तित्व। निर्णायक रूप से, ये पृथक लक्ष्य नहीं हैं, बल्कि परस्पर निहित माने गए हैं: वास्तविक समृद्धि समझ के बिना प्राप्त नहीं हो सकती; अभय तभी उत्पन्न होता है जब व्यक्ति सह-अस्तित्व के साथ तालमेल में रहता है; और सह-अस्तित्व केवल परिवर्तनकारी समझ के माध्यम से ही पूर्ण रूप से साकार होता है। मध्यस्थ दर्शन में, शिक्षा वह सुनियोजित प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्तियों को इस समन्वित अनुभूति की ओर मार्गदर्शित किया जाता है।

### 2.2 शिक्षा: सूचना नहीं, परिवर्तन

नागराज ने स्पष्ट रूप से शिक्षा और विद्या के बीच अंतर किया। पारंपरिक शिक्षा, उन्होंने देखा, दुनिया के बारे में जानकारी प्रदान करती है – तथ्य, तकनीकें, प्रक्रियाएँ – लेकिन मूलभूत प्रश्नों को शायद ही संबोधित करती है कि मनुष्य कौन है, एक अच्छा जीवन क्या है, और व्यक्ति को दूसरों और प्रकृति से कैसे संबंध रखना चाहिए। मध्यस्थ दर्शन का आग्रह है कि सच्ची शिक्षा को पहले इन मूलभूत प्रश्नों का उत्तर देना चाहिए, क्योंकि अन्य सभी सीख इसी ढाँचे के भीतर अपना अर्थ प्राप्त करती हैं।

मध्यस्थ दर्शन द्वारा व्युत्पन्न शैक्षिक विधि इसलिए मुख्य रूप से संवादात्मक और अनुभवात्मक है। शिक्षक एक प्राधिकारी के रूप में नहीं जो सत्य बाँटता है, बल्कि जाँच में एक सहचर के रूप में कार्य करता है, जो पारदर्शी, सुसंगत जीवन के माध्यम से सही समझ का आदर्श प्रस्तुत करता है। विद्यार्थियों को दार्शनिक प्रस्तावों को अपने स्वयं के जीवित अनुभव के खिलाफ परखने, विरासत में मिली मान्यताओं पर प्रश्न करने और नैतिक विवेक की क्षमता विकसित करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। यह दृष्टिकोण आधुनिक शिक्षा सिद्धांतकारों द्वारा 'परिवर्तनकारी शिक्षाशास्त्र' कहे जाने वाले दृष्टिकोण से उल्लेखनीय समानता रखता है, लेकिन यह आयातित समालोचनात्मक सिद्धांत के बजाय एक विशिष्ट भारतीय अस्तित्ववादी ढाँचे में आधारित है।

### 2.3 मानवीय आयाम

मध्यस्थ शिक्षा की मानवीयकरण की आकांक्षा शायद सबसे स्पष्ट रूप से मूल्यों के प्रति इसके दृष्टिकोण में दिखती है। मूल्य शिक्षा को पाठ्यक्रम में एक अलग मॉड्यूल के रूप में जोड़ने के बजाय, मध्यस्थ दर्शन प्रस्तावित करता है कि समझ स्वयं ही मूल्य-युक्त है: जब एक मनुष्य सह-

अस्तित्व को वास्तव में समझ लेता है, तो करुणा, निष्पक्षता और दूसरे के प्रति देखभाल स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होती है। दंड के भय या पुरस्कार के वादे के माध्यम से सद्गुण स्थापित करने की कोई आवश्यकता नहीं है – जागृत व्यक्ति अन्यथा कार्य ही नहीं कर सकता। यह मौलिक दावा व्यवहारवादी परंपरा (जो बाहर से सद्गुण को अनुकूलित करती है) और विशुद्ध तर्कवादी परंपरा (जो केवल तर्क के माध्यम से नैतिक नियम थोपती है) दोनों को चुनौती देता है, इसके स्थान पर एक समन्वित पथ प्रस्तावित करता है जो समझ, भावना और क्रिया को एकीकृत करता है।

### 3. मानव तीर्थ धाम: छत्तीसगढ़ में मध्यस्थ दर्शन का संस्थागत रूप

#### 3.1 संस्थागत अवलोकन

छत्तीसगढ़, भारत में स्थित मानव तीर्थ धाम, मध्यस्थ दर्शन के अध्ययन, प्रसार और अभ्यास के लिए समर्पित सबसे महत्वपूर्ण आवासीय केंद्रों में से एक है। यह संस्था इस स्पष्ट विश्वास पर संचालित होती है कि परिवर्तनकारी शिक्षा केवल कक्षा तक सीमित नहीं रह सकती: इसे संपूर्ण रहन-सहन की व्यवस्था में व्याप्त होना चाहिए। तदनुसार, मानव तीर्थ धाम जाँच के एक समुदाय के रूप में संगठित है, जहाँ प्रतिभागी – विविध पेशेवर और शैक्षिक पृष्ठभूमियों से आकर – ए. नागराज के ग्रंथों के गहन, संरचित अध्ययन में चिंतनशील चर्चा, व्यावहारिक कौशल-निर्माण और सामूहिक उत्तरदायित्व के साथ संलग्न होते हैं।

संस्थागत दर्शन यह है कि परिवर्तनकारी शिक्षा के लिए सबसे अच्छा वातावरण वह है जो अपनी संरचना में सह-अस्तित्व को मूर्त रूप दे। प्रशासनिक निर्णय सहयोगात्मक विचार-विमर्श के माध्यम से किए जाते हैं; शारीरिक श्रम साझा और सम्मानित है; अध्ययन, कार्य और विश्राम की लय को जागरूकता और क्रिया के एकीकरण का समर्थन करने के लिए सचेत रूप से व्यवस्थित किया गया है। इस प्रकार, मानव तीर्थ धाम एक साथ एक विद्यालय और उस दर्शन का एक जीवंत प्रदर्शन दोनों के रूप में कार्य करता है जिसे यह सिखाता है – यह रचना रवींद्रनाथ टैगोर के शांतिनिकेतन और महात्मा गांधी के आश्रम विद्यालयों की याद दिलाती है, फिर भी यह मध्यस्थ दर्शन के अद्वितीय ब्रह्मांडीय और नैतिक ढांचे में निहित है।

#### 3.2 पाठ्यक्रम और शैक्षिक व्यवहार

मानव तीर्थ धाम का पाठ्यक्रम नागराज द्वारा कहे गए

अस्तित्व के 'चार आयामों' पर केंद्रित हैं: पदार्थ अवस्था, प्राणिक अवस्था, जीवन अवस्था, और मानव अवस्था। प्रतिभागी अध्ययन करते हैं कि प्रत्येक आयाम कैसे संचालित होता है, वे कैसे परस्पर संबंधित हैं, और – सबसे महत्वपूर्ण – इसका क्या अर्थ है कि कोई व्यक्ति केवल जैविक आत्म-संरक्षण के स्तर पर कार्य करने के बजाय पूरी तरह से मानव के रूप में अपनी स्थिति में निवास करे। फिर इस अस्तित्वगत मानचित्रण को संबंधों – परिवार, समुदाय, प्रकृति और ज्ञान के साथ – पर मार्गदर्शित चिंतनों की एक श्रृंखला के माध्यम से नैतिक अभ्यास से जोड़ा जाता है।

मानव तीर्थ धाम की शिक्षण पद्धति की एक विशिष्ट विशेषता स्वाध्याय और सामूहिक संवाद का संयोजन पर बल देना है। प्रतिभागी मूल ग्रंथों को ध्यानपूर्वक पढ़ते हैं, व्यक्तिगत संश्लेषण तैयार करते हैं, और फिर उन सुविधाकर्ताओं के साथ खुली चर्चा में संलग्न होते हैं जिन्होंने स्वयं परिवर्तन की यही प्रक्रिया पूरी की है। मूल्यांकन पारंपरिक परीक्षाओं के माध्यम से नहीं किया जाता है; इसके बजाय, प्रगति का आकलन प्रतिभागियों के जीवित संलग्नता की गुणवत्ता के माध्यम से किया जाता है – शोषण-रहित संबंधों की उनकी क्षमता, प्रतिकूलता में उनकी समता, और सही समझ को व्यक्त करने और मूर्त रूप देने की उनकी बढ़ती क्षमता। यह मूल्यांकन प्रतिमान मध्यस्थ दर्शन के इस आधार का एक प्रत्यक्ष आख्यान है कि शिक्षा का सत्यापन परीक्षा कक्षा में नहीं, जीवन में होता है।

#### 3.3 सामाजिक और सामुदायिक प्रभाव

मानव तीर्थ धाम और संबद्ध केंद्रों के कार्यक्रमों के स्नातकों ने मध्यस्थ दर्शन को विविध क्षेत्रों में पहुँचाया है: विद्यालय शिक्षक विज्ञान और सामाजिक अध्ययनों में सह-अस्तित्व के दृष्टिकोणों को एकीकृत कर रहे हैं; कृषि कार्यकर्ता अपने श्रम को पारिस्थितिकीय आयाम में जिम्मेदार भागीदारी के रूप में पुनर्कल्पना कर रहे हैं; इंजीनियर डिजाइन को स्थिरता और मानवीय आवश्यकता के माध्यम से पुनर्विचार कर रहे हैं, न कि केवल बाजार की माँग के आधार पर। ये परिणाम उससे संरेखित हैं जिसे मध्यस्थ दर्शन वास्तविक शिक्षा का व्यावहारिक फल मानता है: संकीर्ण विशेषज्ञों का उत्पादन नहीं, बल्कि एकीकृत मानवों का निर्माण जो सामूहिक कल्याण के लिए सार्थक योगदान देने में सक्षम हों।

#### 4. मध्यस्थ दर्शन और बौद्ध मध्यम मार्ग: एक दार्शनिक समानता

##### 4.1 बौद्ध विचार में मध्यम मार्ग

मध्यम मार्ग (पालि: मज्झिमा पटिपदा; संस्कृत: मध्यमा प्रतिपद) की अवधारणा बौद्ध दर्शन में एक आधारभूत स्थान रखती है। सिद्धार्थ गौतम द्वारा राजसी विलासिता और कठोर तपस्या दोनों के अपने अनुभव के बाद प्रसिद्ध रूप से अभिव्यक्त, मध्यम मार्ग इंद्रिय-सुख में लिप्तता और आत्म-दमन के चरम के बीच एक मार्ग बताता है। अपने नैतिक आयाम में, इसे आर्य अष्टांगिक मार्ग के रूप में संचालित किया जाता है – सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक्

व्यायाम, सम्यक् स्मृति, और सम्यक् समाधि। दार्शनिक रूप से, मध्यम मार्ग को नागार्जुन द्वारा माध्यमिक विद्यालय में और विकसित किया गया, जो तर्क देता है कि सभी घटनाओं का कोई स्वतंत्र, अपना अस्तित्व नहीं है और वे केवल संबंधपरक परस्परनिर्भरता (प्रतीत्यसमुत्पाद) में विद्यमान हैं।

##### 4.2 मध्यस्थ दर्शन के साथ समानताएँ

बौद्ध मध्यम मार्ग और मध्यस्थ दर्शन के बीच समानताएँ दार्शनिक रूप से गहरी हैं, भले ही दोनों परंपराएँ भिन्न ऐतिहासिक और अवधारणात्मक संदर्भों से उभरी हों। निम्न तालिका प्रमुख समानताओं को दर्शाती है:

तालिका 1: प्रमुख दार्शनिक और शैक्षिक आयामों में बौद्ध मध्यम मार्ग और मध्यस्थ दर्शन का तुलनात्मक विश्लेषण

आयाम	बौद्ध मध्यम मार्ग	मध्यस्थ दर्शन
आधिभौतिक आधार	प्रतीत्यसमुत्पाद – आश्रित उत्पत्ति; सभी वस्तुएँ संबंधपरक रूप से विद्यमान।	सह-अस्तित्व – प्रत्येक इकाई संपूर्ण के भीतर और उसके माध्यम से विद्यमान
चरम सीमाओं की आलोचना	इंद्रिय-सुख में लिप्तता और कठोर तपस्या दोनों को अस्वीकार करता है।	जड़ भौतिकवाद और पलायनवादी आध्यात्मिकता दोनों को अस्वीकार करता है।
मुक्ति का मार्ग	सही समझ जो निर्वाण – दुःख की समाप्ति – की ओर ले जाती है।	सही समझ जो सुख – सामंजस्य और अभय – की ओर ले जाती है।
शिक्षक की भूमिका	बुद्ध एक मार्गदर्शक के रूप में जो जीवंत उदाहरण के माध्यम से मार्ग का आदर्श प्रस्तुत करते हैं।	शिक्षक एक सहचर के रूप में जो पारदर्शी जीवन जीकर सह-अस्तित्व को मूर्त रूप देता है।
शैक्षिक लक्ष्य	प्रज्ञा (ज्ञान) और करुणा (दयालुता) का विकास	सही समझ, नैतिक आचरण, और सहभागी उत्तरदायित्व का विकास
सामाजिक नीति	दान (उदारता), शील (नैतिक सिद्धांत), और संघ (अभ्यास का समुदाय)।	उदारता (उदारता), निर्भीक अभिव्यक्ति, और सामूहिक समृद्धि

शायद सबसे महत्वपूर्ण समानता इस समझ में निहित है कि अंततः शिक्षा किस लिए है। दोनों परंपराएँ यह स्वीकार करने से इनकार करती हैं कि सीखने का उद्देश्य बाह्य है – आर्थिक सफलता, सामाजिक प्रतिष्ठा, अनुष्ठानिक शुद्धता – और इसके बजाय इस बात पर जोर देती हैं कि शिक्षा का सबसे गहरा लक्ष्य एक आंतरिक परिवर्तन है जो दुनिया को देखने और उस पर प्रतिक्रिया करने के तरीके को बदल देता है। दोनों दुःख (या अस्तित्वगत भ्रम) को वास्तविकता के साथ विकृत संबंध से उत्पन्न मानते हैं, और दोनों मानते हैं कि सही समझ – चाहे प्रज्ञा कहें या सही समझ – इसका उपाय है।

##### 4.3 भिन्नता के बिंदु

इन समानताओं के साथ-साथ, महत्वपूर्ण अंतरों को स्वीकार करना उचित है। बौद्ध दर्शन – विशेष रूप से इसके थेरवाद

रूपों में – एक व्यक्तिगत मोक्षवाद की ओर प्रवृत्त रहा है जिसमें प्राथमिक कार्य मुक्ति की व्यक्तिगत प्राप्ति है। जबकि महायान और संलग्न बौद्ध परंपराएँ इसे सामाजिक परिवर्तन को शामिल करने के लिए काफी विस्तारित करती हैं, उन्मुखीकरण प्राणियों के दुःख से मुक्ति में ही निहित रहता है। इसके विपरीत, मध्यस्थ दर्शन अपने उद्देश्य को शुरू से ही अधिक स्पष्ट रूप से सामाजिक और पारिस्थितिकीय रूप में चित्रित करता है: सही समझ केवल एक व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है, बल्कि सामाजिक संस्थाओं – परिवार, अर्थव्यवस्था, शासन – के सह-अस्तित्व सिद्धांतों पर पुनर्संरचना का आधार है। जोर का यह अंतर – आंतरिक मुक्ति बनाम सामाजिक पुनर्निर्माण – तुलनात्मक विश्लेषण में इसे अनदेखा करने के बजाय संरक्षित रखने योग्य है।

## 5. मध्यस्थ दर्शन और अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा सहयोग (डेलर्स रिपोर्ट)

### 5.1 डेलर्स आयोग और उसका जनादेश

1993 में, यूनेस्को ने यूरोपीय आयोग के पूर्व अध्यक्ष जैक्स डेलर्स की अध्यक्षता में इक्कीसवीं सदी के लिए शिक्षा पर एक अंतरराष्ट्रीय आयोग की स्थापना की। आयोग को दुनिया भर में शिक्षा के सामने आने वाली चुनौतियों पर चिंतन करने और एक ऐसी दृष्टि को अभिव्यक्त करने का कार्य सौंपा गया जो नई सदी में नीति का मार्गदर्शन कर सके। इसकी रिपोर्ट, 'Learning: The Treasure Within' (सीखना: आंतरिक निधि), 1996 में प्रकाशित हुई, जो अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक प्रवचन में सबसे अधिक उद्धृत दस्तावेजों में से एक बन गई। डेलर्स रिपोर्ट के केंद्र में सीखने के चार स्तंभों की अवधारणा है: सीखना जानने के लिए (learning to know), सीखना करने के लिए (learning to do), सीखना साथ रहने के लिए (learning to live together), और सीखना होने के लिए (learning to be) – एक चतुर्धातुक ढांचा जो शिक्षा की किसी एक आयाम तक अपरिवर्तनीयता पर जोर देता है।

### 5.2 डेलर्स रिपोर्ट चार स्तंभ एवं मध्यस्थ दर्शन

डेलर्स स्तंभों और मध्यस्थ दर्शन में अंतर्निहित शैक्षिक दर्शन का सावधानीपूर्वक अध्ययन उल्लेखनीय संरचनात्मक समानताएँ प्रकट करता है:

1. **सीखना जानने के लिए** – डेलर्स रिपोर्ट इसे समझ के साधनों को अर्जित करना, ध्यान, स्मृति और चिंतन को विकसित करना, तथा आश्चर्य की क्षमता का विकास करना बताती है। मध्यस्थ दर्शन में, यह बोध (आत्म-चिंतन और सही संज्ञान की क्षमता) के विकास के अनुरूप है। दोनों ढांचे ज्ञान को डेटा के संचय तक सीमित करने का विरोध करते हैं, इसके बजाय मन की ऐसी गुणवत्ता के विकास पर जोर देते हैं जो अनुभव के साथ सार्थक रूप से संलग्न हो सके।
2. **सीखना करने के लिए** – डेलर्स रिपोर्ट इस स्तंभ को व्यावहारिक क्षमता और टीमों में काम करने, संघर्षों का

प्रबंधन करने, तथा विविध संदर्भों में उत्पादक रूप से योगदान करने की क्षमता से जोड़ती है। मध्यस्थ दर्शन का समानांतर जोर सही समझ की सेवा में प्रयुक्त 'कौशल' पर है – इस बात पर आग्रह कि व्यावहारिक क्षमता, जब नैतिक अंतर्दृष्टि से अलग कर दी जाती है, तो केवल साधनगत और संभावित रूप से विनाशकारी बन जाती है। इस प्रकार दोनों ढांचे तकनीकी कौशल को मानवीय मूल्यों के साथ एकीकृत करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

3. **सीखना साथ रहने के लिए** – यह शायद वह स्तंभ है जो मध्यस्थ दर्शन के साथ सबसे गहराई से अनुगूँजित होता है। डेलर्स रिपोर्ट दूसरों के साथ – जिनमें विभिन्न संस्कृतियों, दृष्टिकोणों और इतिहासों वाले लोग शामिल हैं – सम्मानपूर्ण सह-अस्तित्व की क्षमता को एक मूलभूत शैक्षिक लक्ष्य के रूप में पहचानती है। मध्यस्थ दर्शन का संपूर्ण दार्शनिक ढांचा इस आधार पर निर्मित है कि अस्तित्व स्वाभाविक रूप से अस्तित्वगत है, और शिक्षा का सर्वोच्च कार्य इस वास्तविकता को सीखने वाले के लिए एक अमूर्त सिद्धांत के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवित सत्य के रूप में प्रकट करना है। यह समानता केवल अलंकारिक नहीं है; दोनों ढांचे सामाजिक एकजुटता को वास्तविकता की प्रकृति के बारे में एक आधिभौतिक दावे में आधारित करते हैं।
4. **सीखना होने के लिए** – डेलर्स रिपोर्ट इसे मानव व्यक्ति के सभी आयामों में पूर्णतम विकास के रूप में बताती है: बुद्धि, संवेदनशीलता, सौंदर्य अनुभव, व्यक्तिगत उत्तरदायित्व, और आध्यात्मिक विकास। मध्यस्थ दर्शन की 'मानव चरित्र' के प्रति प्रतिबद्धता – एक ऐसे व्यक्ति का समन्वित निर्माण जिसकी समझ, आचरण और अनुभव सुसंगत संरेखण में हों – सीधे इस आकांक्षा को प्रतिध्वनित करती है। दोनों संकीर्ण रूप से उपयोगितावादी शिक्षा द्वारा उत्पादित खंडित मानव को अस्वीकार करते हैं और एक ऐसी शिक्षा का आह्वान करते हैं जो समग्रता का विकास करती है।

### 5.3 डेलर्स रिपोर्ट के स्तंभ और मध्यस्थ दर्शन: तुलना

तालिका 2: डेलर्स आयोग के चार स्तंभों और मध्यस्थ दर्शन की शैक्षिक दृष्टि के बीच संरचनात्मक समानताएँ

डेलर्स स्तंभ	मुख्य यूनेस्को आशय	मध्यस्थ दर्शन समकक्ष
सीखना जानने के लिए	समझ की गुणवत्ता का विकास करना; आश्चर्य और जाँच की क्षमता विकसित करना	बोध और सही समझ – सही संज्ञान; अस्तित्वगत वास्तविकता के प्रति जागरण
सीखना करने के लिए	व्यावहारिक क्षमता का पारस्परिक और नैतिक कौशल के साथ एकीकरण	सह-अस्तित्व के साथ संरेखित कौशल – संबंधपरक सद्भाव की सेवा में कौशल
सीखना साथ रहने के लिए	विविधता के प्रति सम्मान; शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व; सहयोगात्मक संलग्नता	जीवित अभ्यास के रूप में सह-अस्तित्व – वास्तविकता की मूलभूत प्रकृति के रूप में सह-अस्तित्व
सीखना होने के लिए	मानव व्यक्ति का पूर्ण विकास: बुद्धि, संवेदनशीलता, उत्तरदायित्व	मानव चरित्र – समन्वित व्यक्तित्व; समझ, आचरण, अनुभव का सामंजस्य

### 5.4 समानता से परे: एक पूरक संबंध

जबकि डेलर्स रिपोर्ट और मध्यस्थ दर्शन के बीच समानताएँ प्रकाशक हैं, उनके बीच के संबंध को केवल संरचनात्मक तुल्यता तक सीमित नहीं किया जाना चाहिए। डेलर्स रिपोर्ट मुख्य रूप से एक नीति दस्तावेज है – यह सरकारों, शिक्षा मंत्रालयों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों से संवाद करती है, और इसकी सिफारिशें प्रणालीगत सुधार और संस्थागत डिजाइन के रूप में तैयार की गई हैं। मध्यस्थ दर्शन मुख्य रूप से एक दार्शनिक ढांचा है – यह व्यक्तिगत परिवर्तन से संवाद करता है और प्रस्तावित करता है कि संस्थागत परिवर्तन केवल तभी स्थायी हो सकता है जब वह ऊपर से थोपे जाने के बजाय परिवर्तित मानवों से उत्पन्न हो।

पंजीकरण में यह अंतर वास्तव में विरोधाभासी के बजाय पूरक है। डेलर्स रिपोर्ट एक वैश्विक रूप से मान्यता प्राप्त मानक शब्दावली प्रदान करती है जिसके माध्यम से मध्यस्थ दर्शन की अंतर्दृष्टियों को उनकी गहराई खोए बिना अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक प्रवचन में संप्रेषित किया जा सकता है। इसके विपरीत, मध्यस्थ दर्शन डेलर्स स्तंभों – विशेष रूप से अक्सर उद्धृत लेकिन कम सैद्धांतिक स्तंभों 'साथ रहने के लिए सीखना' और 'होने के लिए सीखना' – के लिए एक दार्शनिक आधार प्रदान करता है, जिसके द्वारा यह बताता है कि सह-अस्तित्व और समन्वित व्यक्तित्व केवल वांछनीय नीति परिणाम क्यों नहीं हैं, बल्कि वास्तविकता की मूलभूत प्रकृति की अभिव्यक्तियाँ हैं।

**6. विश्लेषण: मानवीय शिक्षा के एक सुसंगत दर्शन की ओर** पिछले भागों में परीक्षण किए गए धागों को एक साथ खींचते हुए, एक सुसंगत व्यावहारिक और मानवीय शिक्षा के दर्शन को अभिव्यक्त करना संभव हो जाता है जो एक साथ स्वदेशी भारतीय विचारों में निहित, शास्त्रीय बौद्ध ज्ञान के

साथ अनुगूँजित, और अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक सुधार के साथ उत्पादक संवाद में है। निम्नलिखित प्रस्ताव इस दर्शन की आवश्यक रूपरेखा को समाहित करते हैं:

पहला, शिक्षा इस बात के विवरण में आधारित होनी चाहिए कि मनुष्य क्या हैं और वे किस प्रकार के अस्तित्व में निहित हैं। मध्यस्थ दर्शन का सह-अस्तित्व का आधिभौतिकी यह आधार प्रदान करता है: मनुष्य अस्तित्व के लिए संघर्ष करने वाला एक पृथक, प्रतिस्पर्धी परमाणु नहीं है, बल्कि एक अंतर्संबंधित व्यवस्था में एक भागीदार है जो परस्पर पोषण और सह-नियमन द्वारा विशेषित है। इस आधार से शुरू होने वाली शिक्षा, प्रतिस्पर्धा और कमी पर आधारित शिक्षा से बहुत भिन्न दिखेगी।

दूसरा, सही समझ के विकास को शिक्षा का प्राथमिक कार्य माना जाना चाहिए, जिसमें ज्ञान-अर्जन, कौशल-विकास और व्यावसायिक तैयारी को द्वितीयक आयामों के रूप में समझा जाए जो इस प्राथमिक कार्य से अपना अर्थ प्राप्त करते हैं। यह व्यावहारिक दक्षताओं की उपेक्षा करने का सुझाव नहीं है – मध्यस्थ दर्शन इस बात पर जोर देता है कि सही समझ को कुशल, प्रभावी क्रिया में अभिव्यक्त होना चाहिए – लेकिन यह प्राथमिकताओं के उचित क्रम पर जोर देता है। तीसरा, शिक्षा की संस्थाओं को स्वयं उन मूल्यों को मूर्त रूप देना चाहिए जिन्हें वे सिखाने का दावा करती हैं। मानव तीर्थ धाम इस सिद्धांत का उदाहरण है: इसकी संगठनात्मक संरचना, प्राधिकार और जवाबदेही के पैटर्न, और दैनिक जीवन की लय को उस दर्शन के अनुरूप डिजाइन किया गया है जिसे यह प्रदान करता है। यह संरचनात्मक अखंडता शैक्षिक रूप से आवश्यक है – विद्यार्थी किसी भी स्पष्ट पाठ की तुलना में संस्थागत जीवन के अप्रकट पाठ्यक्रम से अधिक सीखते हैं। चौथा, मानवीय शिक्षा को निर्धारित परिणामों के एक निश्चित समूह के बजाय व्यक्तिगत और

सामूहिक निर्माण की एक सतत प्रक्रिया के रूप में समझा जाना चाहिए। बौद्ध और मध्यस्थ दोनों परंपराएँ मानती हैं कि सही समझ समय, अनुभव, चिंतन और संवाद के माध्यम से गहरी होती है; इसे पूर्णता के लिए डिज़ाइन किए गए पाठ्यक्रम में पूरी तरह से प्रदान नहीं किया जा सकता है। डेलर्स रिपोर्ट की 'आजीवन सीखने' की अवधारणा इस प्रतिबद्धता को प्रतिध्वनित करती है, हालाँकि मध्यस्थ दर्शन इसे अधिक स्पष्ट दार्शनिक आधार प्रदान करता है।

## 7. निष्कर्ष

इस शोधपत्र ने तर्क दिया है कि मध्यस्थ दर्शन व्यावहारिक और मानवीय शिक्षा की एक समृद्ध और आंतरिक रूप से सुसंगत दृष्टि प्रदान करता है – जो न केवल भारतीय शैक्षिक दर्शन के भीतर, बल्कि वैश्विक शैक्षिक प्रवचन में भी गंभीर ध्यान देने योग्य है। ए. नागराज (दर्शन-ए-नाराज़) के विचारों में निहित, छत्तीसगढ़ में मानव तीर्थ धाम जैसी संस्थाओं के माध्यम से परिष्कृत, संतुलन और संबंधपरक समझ के प्रति बौद्ध मध्यम मार्ग की प्रतिबद्धताओं के साथ अनुगूँजित, और डेलर्स आयोग के चार स्तंभों के साथ संरचनात्मक रूप से संरेखित, यह दर्शन उन कमियों को सटीक रूप से संबोधित करता है जिनकी पहचान आलोचकों ने समकालीन शिक्षा में की है: इसकी साधनगतता, इसका खंडन, और एक अंतर्संबंधित दुनिया में बुद्धिमान भागीदारी में सक्षम समन्वित मानवों का विकास करने में इसकी विफलता।

मध्यस्थ दर्शन का अद्वितीय योगदान इसके इस आग्रह में निहित है कि शिक्षा का सुधार उस समझ के सुधार से अलग करके आगे नहीं बढ़ सकता जो इसे आकार देती है। कोई भी पाठ्यक्रम नवाचार, शैक्षणिक तकनीक, या संस्थागत पुनर्संरचना तब तक वास्तव में मानवीय शिक्षा उत्पन्न नहीं करेगी, जब तक कि स्वयं शिक्षक – और वह व्यापक संस्कृति जिसमें शिक्षा निहित है – ने मध्यस्थ दर्शन द्वारा वर्णित समझ का परिवर्तन नहीं कर लिया हो। यह एक कठिन दावा है, लेकिन यह अंततः एक आशापूर्ण भी है: यह शैक्षिक नवीकरण का बीज दूर की नीति केंद्रों या तकनीकी सफलताओं में नहीं, बल्कि मनुष्यों की स्वयं को और अपनी दुनिया को अधिक स्पष्ट रूप से समझने की क्षमता में रखता है – एक ऐसी क्षमता जो, दर्शन का आग्रह है, प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपलब्ध है जो ईमानदारी से जाँच करने को तैयार है।

भविष्य का शोध मानव तीर्थ धाम और संबद्ध संस्थानों में शैक्षिक परिणामों के अनुभवजन्य अध्ययनों; यहाँ पहचानी

गई समानताओं को अन्य गैर-पश्चिमी शैक्षिक दर्शनों तक विस्तारित करने वाले तुलनात्मक विश्लेषणों; और मध्यस्थ दर्शन के सिद्धांतों को उनकी परिवर्तनकारी गहराई खोए बिना मुख्यधारा की शैक्षिक प्रणालियों में कैसे एकीकृत किया जा सकता है, पर नीति-केंद्रित जाँचों का उत्पादक रूप से अन्वेषण कर सकता है। यह क्षेत्र समृद्ध है, और इसके द्वारा उठाए गए प्रश्न शिक्षा का दर्शन पूछ सकने वाले सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नों में से हैं।

## 8. सन्दर्भ

1. नागराज ए. मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद). अमरकंटक: जीवन विद्या प्रकाशन, 1985.
2. नागराज ए. मानव व्यवहार दर्शन. अमरकंटक: जीवन विद्या प्रकाशन, 2001.
3. नागराज ए. सार्वभौम व्यवस्था दर्शन. अमरकंटक: जीवन विद्या प्रकाशन, 1996.
4. Delors J. (Ed.). Learning: The Treasure Within - Report to UNESCO of the International Commission on Education for the Twenty-First Century. Paris: UNESCO Publishing, 1996.
5. नागार्जुन. (c. 2nd century CE). मूलमध्यमककारिका. (Trans. J. Garfield). Oxford: Oxford University Press, 1995.
6. Harvey P. An Introduction to Buddhist Ethics: Foundations, Values and Issues. Cambridge: Cambridge University Press, 2013.
7. Tagore R. My Reminiscences. London: Macmillan, 1917.
8. Kumar K. Political Agenda of Education: A Study of Colonialist and Nationalist Ideas (2nd ed.). New Delhi: Sage Publications, 2005.
9. मानव तीर्थ धाम. जीवन विद्या शिविर: प्रतिभागी पुस्तिका. छत्तीसगढ़: मानव तीर्थ धाम प्रकाशन, 2018.
10. Freire P. Pedagogy of the Oppressed. New York: Continuum, 1970.
11. UNESCO. Rethinking Education: Towards a Global Common Good? Paris: UNESCO Publishing, 2015.
12. Radhakrishnan S. The Principal Upanishads. London: George Allen and Unwin, 1953.
13. Mezirow J. Transformative Dimensions of Adult Learning. San Francisco: Jossey-Bass, 1991.

14. सिसोदिया, आर. (Ed.). जीवन विद्या: एक परिचय. नई दिल्ली: जीवन विद्या मिशन, 2014.
15. Thich Nhat Hanh. Interbeing: Fourteen Guidelines for Engaged Buddhism. Berkeley: Parallax Press, 1998.
16. UNESCO IBE. Global Monitoring Report: Education for People and Planet. Paris: UNESCO, 2016.
17. Easwaran E. (Trans.). The Dhammapada. Tomales, CA: Nilgiri Press, 2007.
18. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय, 2020.

#### **Creative Commons (CC) License**

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.